प्रथम अध्याय

प्रभाकर श्रोत्रिय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रभाकर श्रोत्रिय संप्रति हिंदी आलोचना में सुपरिचित हैं। हिंदी आलोचना में उनको सबसे विश्वसनीय आलोचक के रूप में माना जाता है। श्रोत्रिय जी ने आलोचना के अलावा साहित्य निर्माण भी किया है। अक्षरा, साक्षात्कार, वागर्थ और नया ज्ञानोदय जैसी पत्रिकाओं के संपादकत्व का भार उन्होंने संभाला है। आलोचना के अलावा श्रोत्रिय जी ने निबंध लेखन भी किया है। इनके निबंधों में आलोचक श्रोत्रिय जी को देखा जा सकता है। इसके अलावा उन्होंने तीन नाटक लिखे हैं - 'इला', 'साँच कहूँ तो' और 'फिर से जहाँपनाह' इन नाटकों से उनका व्यक्तित्व झलकता है। श्रोत्रिय जी के व्यक्तित्व के पहलू इन नाटकों में पाए जा सकते हैं। इनके साहित्य लेखन की शुरूआत इनकी जन्मभूमि जावरा से हुई। बचपन से श्रोत्रिय जी को काव्य के प्रति लगाव रहा है। फलतः इनके साहित्य प्रवास की शुरूआत भी काव्य-लेखन से ही हुई है।

श्रोत्रिय जी की पहली प्रकाशित किताब है 'सुमन : मनुष्य और स्रष्टा' जो 1971 में प्रकाशित हुई इसके बाद श्रोत्रिय जी की आलोचनात्मक किताबें प्रकाशित हुई। तद्नंतर श्रोत्रिय जी लेखन में सक्रीय रहे हैं। इस प्रकार श्रोत्रिय जी के जीवन पहलुओं का परिचय कृतित्व को आधार बनाकर दिया जा सकता है।

1.1 व्यक्तित्व

किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व जन्म, बचपन, शिक्षा, परिवार, नौकरी एवं उसके व्यक्तित्व के गुणों के आधार पर तय किया जाता है। यहाँ पर भी श्रोत्रिय जी के व्यक्तित्व को इन्हीं बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

1.1.1 जन्म

प्रख्यात आलोचक श्रोत्रिय जी का जन्म मध्यप्रदेश के जावरा ग्राम में 19 दिसंबर, 1938 में हुआ। आगे चलकर जब वे लेखन करने लगे तो इस प्रदेश का प्रभाव उनके लेखन पर पड़ा हुआ दिखाई देता है। अपने परिवार में श्रोत्रिय जी सबसे छोटे थे।

1.1.2 बचपन

श्रोत्रिय जी का बचपन गरीबी में गुजरा है। वे जब बारह साल के थे तब उनके पिताजी का देहांत हुआ। उनके पिताजी संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य थे। बारह साल की छोटीसी उम्र में पिताजी की मृत्यु से उनपर पहाड़ सा टूट पड़ा। फलतः श्रोत्रिय जी की आगे की शिक्षा का खर्चा उन्हें स्वयं को ही उठाना पड़ा। इसीलिए उन्होने बारह साल की उम्र में ट्यूशन लेना शुरू किया। इसी संदर्भ में वे स्वयं लिखते हैं - ''मैने उस वक्त बच्चों की ट्यूशनें करनी शुरू की जिस वक्त आसपास के लड़कों को नाक सिकोड़ने और नाड़ा बांधने तक की तमीज नहीं थी।''[1] इस प्रकार इतनी छोटीसी उम्र में जीवन का कठोर यथार्थ श्रोत्रिय जी अनुभव कर चुके थे।

1.1.3 परिवार

श्रोत्रिय जी का परिवार एक बड़ा परिवार था। उनके पिताजी संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य थे। उसी विद्यालय में श्रोत्रिय जी की प्राथमिक शिक्षा पूरी हुई। उन्हें उनसे बड़े दो भाई थे जो पढ़ाई के लिए गाँव से बाहर गए हुए थे। श्रोत्रिय जी अपने माता-पिता के साथ रहते थे। श्रोत्रिय जी का विवाह होने के बाद उनकी आठ संताने हुई। उनमें जया, मीमा, अलका, नीना और अनामिका यही बेटियाँ तथा आवेश आदि तीन बेटे हैं। इस प्रकार श्रोत्रिय जी का परिवार एक बड़ा परिवार है।

1.1.4 शिक्षा

प्रभाकर श्रोत्रिय जी की प्राथमिक शिक्षा जावरा में ही अपने पिता की देखरेख में हुई। श्रोत्रिय जी के पिताजी उस संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य थे जिसमें श्रोत्रिय जी पढ़ते थे। उन्हें छटी कक्षा के लिए सरकारी स्कूल में भरती कराया गया। इसी साल उनके पिताजी का स्वर्गवास हुआ। श्रोत्रिय जी की आगे की पढ़ाई इसी विद्यालय में पूरी हुई। जावरा से स्नातक होने के बाद उन्होने एम्. ए. तथा पीएच्. डी. की उपाधि विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से प्राप्त की और अधिव्याख्याता के रूप में हमीदिया महाविद्यालय, भोपाल में नियुक्त हुए। आगे चलकर इसी विश्वविद्यालय से उन्होने डी. लिट. की उपाधि भी प्राप्त की।

1.1.5 नौकरी

अपने जीवनकाल में आजतक श्रोत्रिय जी ने अनेक जगहों पर काम किया है। कई पत्रिकाओं का संपादकत्व उन्होने निभाया है। उनमें - वागर्थ अक्षरा, साक्षात्कार और नया ज्ञानोदय आती हैं। उन्होने सबसे पहले हमीदिया महाविद्यालय, भोपाल के हिंदी विभाग में अधिव्याख्याता के रूप में काम किया है। साथ ही साथ उन्होने इसी जगह पर शोध-निर्देशक के रूप में काम किया है। विक्रम और खैरागड़ विश्वविद्यालय में भी उन्होने शोध-निर्देशक का काम सफलता से किया है। तत्पश्चात वे भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक के रूप में भी कार्यरत रहे हैं। भारतीय भाषा परिषद कोलकाता के निदेशक भी रहे हैं। मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग में श्रोत्रिय जी विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी के रूप में काम कर चुके हैं।

इस प्रकार श्रोत्रिय जी ने अनेक संस्थाओं में कार्य किया है। संप्रति वे स्वतंत्र लेखन में जुट गए हैं।

1.2 व्यक्तित्व के गुण

1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्व

प्रत्यक्ष रूप से श्रोत्रिय जी से मैं मिला तो नहीं परंतु दूरभाष पर उनसे अनेक बार मेरा संपर्क हुआ है। इससे उनके बहिरंग और अंतरंग व्यक्तित्व के बारे में मैं कुछ जानकारी प्राप्त कर सका हूँ। श्रोत्रिय जी घर में अकसर खादी की जेबवाली बनियाइन और लुंगी पहनते हैं, आँखों पर हमेशा चश्मा और उनके हाथ में हमेशा किताब रहती है। गले में रूद्राक्ष की माला पहनते हैं जो किसी व्यक्ति से गले मिलते समय उसे चूभती जरूर है मगर वह भी आल्हाददायक लगती है। बाहर जाते वक्त श्रोत्रिय जी अकसर शॉर्ट शर्ट और पैंट पहनते हैं। इस प्रकार एक साहित्यकार को जिस प्रकार दिखना चाहिए उसी प्रकार का उनका बाहरी रूप नजर आता है।

1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्व

बाहर से रूष्ठ दिखई देने वाले श्रोत्रिय जी का अंतरंग अद्भुत है। उनका अंतरंग किसी के ध्यान में आसानी से नहीं आता। किसी व्यक्ति से मिलते वक्त वे जोर से हाथों को दबाते हैं और जोर से उस व्यक्ति को छाती से लगाते हैं। अगर यह उनका शिष्य है तो और भी सोने पे सुहागा। डॉ. रामविलास शर्मा उनके सौजन्यशील स्वभाव के बारे में लिखते हैं - ''भोपाल यात्रा के दौरान अधिकांशतः मैं श्रोत्रिय जी के साथ ठहरता हूँ। बहूरानी अर्थात उनकी पत्नी का स्वभाव भी सौजन्य की चरम सीमा है। उनके बेबाक ठहाके उनकी जिंदादिली के सबूत हैं। एक सुदक्ष-गृहिणी के हाथों का संस्पर्श घर भर में व्याप्त है। पुत्र आवेश और पुत्री अनामिका को माता-पिता के संस्कार घुट्टी में मिले हैं।''[2] यहाँ पर शर्मा जी ने उनके तथा उनकी पत्नी के स्वभाव की विशेषताओं को भी

स्पष्ट किया है।

श्रोत्रिय जी के अंतर्जगत के बारे में निरंजन श्रोत्रिय लिखते हैं - ''श्रोत्रिय जी का अंतर्जगत बहुत ही विलक्षण है। साहित्य के चरम को छू लेने के साथ-साथ कहीं-कहीं वे पिता भी है, पति भी हैं, अनुज भी हैं, अग्रज भी, पुत्र भी उन तमाम रिश्तों में वे अधिक देर तक लिपटे नहीं रहते। अपने अंतर्जगत का खिंचाव वे हर पल महसूस करते रहते है।''[3] इस प्रकार श्रोत्रिय जी का अंतर्मन कई विषयों को छूता हुआ साहित्य की ओर मुड़ जाता है।

1.2.2.1 परिश्रमी व्यक्ति

श्रोत्रिय जी बचपन से ही परिश्रमी रहे हैं। बारह वर्ष की उम्र में पिताजी के देहांत के कारण उन्हें ट्यूशन लेनी पड़ी। काम करने की यह प्रवृत्ति उनके साथ जीवनभर रही। बड़े दो भाई पढ़ाई के लिए शहर में गए थे इसी कारण उन्हें अपना और माँ का खर्चा-पानी देखना पड़ता था। तब से उच्च शिक्षा पूरी होने तक उन्होने परिश्रम पूर्वक जीवन बिताया। आगे जब वे अध्यापक बने तब इसके साथ-साथ लेखन भी करने लगे और कई पत्रिकाओं के संपादकत्व का भार भी संभाल लिया। उनका मानना है कि गरीबी एवं कठिनाईयों के कारण ही व्यक्ति उन्नति कर सकता है। उसी प्रकार अनेक कठिनाईयों का सामना करते हुए उन्होने अपना जीवन व्यतीत किया है और आज भी वे स्वतंत्र रूप से लेखन करने में कार्यरत हैं। इसमें उनका परिश्रमी व्यक्तित्व झलकता है।

1.2.2.2 दृढसंकल्पी एवं संघर्षशील

श्रोत्रिय जी बचपन से दृढसंकल्पी एवं संघर्षशील रहे हैं। पिताजी की मृत्यु के पश्चात वे असहाय हो गए थे परंतु दृढसंकल्पी होने के कारण उन्होने जीवन की नैया को रूकने नहीं दिया। वे हमेशा संघर्ष करते रहे। अपने इस दृष्टिकोण के बारे में वे स्वयं कहते हैं - ''मेरा ख्याल है कि तकलीफें, कमजोरियां और संघर्ष हमारी साधना का रहस्य है; व्यक्तित्व का सार है; उन्हें दिखाकर सहानुभूति अर्जित करना उस बेजुबान मानवता के साथ बलात्कार है, जो हमसे हजार गुना तकलीफों में दिन गुजार रही है। मैं लेखक के त्रासों और उसके शोषण को अतिरिक्त महत्त्व देना मनुष्यता के प्रति 'आत्म-निर्वासन' जैसे घृणित और विश्वासघाती दर्शन का प्रतिरूप मानता हूँ।''[4]

1.2.2.3 लोकतंत्र से निराश

श्रोत्रिय जी ने अपने नाटक 'फिर से जहाँपनाह' में लोकतंत्र शासन व्यवस्था के प्रति अपने विचार व्यक्त किए हैं। उनके मतानुसार आज हमारे प्रजातंत्र के मुखिया ही सबसे बड़े भ्रष्ट व्यक्ति होते हैं। यदि प्रजातंत्र के

मुखिया ही भ्रष्ट हो तो अन्य राजनेताओं से क्या अपेक्षा की जा सकती है ? श्रोत्रिय जी को शासन व्यवस्था और इसे चलानेवाले राजनेता बिल्कुल पसंद नहीं है। इसके लिए उन्होने तानाशाही का जिक्र किया है। इसके बारे में निरंजन श्रोत्रिय लिखते हैं - ''सत्ताधिशों और लाबीइंग के खिलाफ खड़ा होना जहां उनके स्वत्व और सिद्धांतों की रक्षा करता है, वहीं अलगाव की वजह से जुड़े अनुभवों को आत्मसात न कर पाने का गहरा दुःख भी उन्हें सालता है।''[5] इस प्रकार श्रोत्रिय जी सत्ताधीश एवं उनकी नीतियों के खिलाफ हैं।

1.2.2.4 अंतर्मुखी

श्रोत्रिय जी हमेशा खामोश रहनेवाले व्यक्ति है। किसी व्यक्ति की पहचान हुए बिना वे उससे बातचीत नहीं करते। अपने आपको किसी दल में उन्होने शामिल नहीं किया है। वे स्वयं कहते हैं - ''यों मेरा स्वभाव बहिर्मुखता की तरफ आकर्षित होने का है, उसे पीट पीटकर मैंने अन्तर्मुखी बनाया है। सभा में पीछे बैठना, अक्सर खामोश रहना, व्यक्ति और समाज का चुपचाप अध्ययन करना लगभग मेरा स्वभाव बन गया है, लेकिन लम्बे लेखन आदि से कभी-कभी ऊबकर मैंने बहिर्मुख कामों में रूचि ली है, ताकि इस शून्य को कम निरर्थक बनाया जा सके।''[6]

1.2.2.5 नारी के प्रति करूणा

उनके साहित्य से यह पता चलता है कि श्रोत्रिय जी के मन में नारी के प्रति अगाध करूणा छिपी हुई है। वे मानते हैं कि आज इक्कीसवीं सदी में नारी स्वयं को स्वतंत्र मानती है। यह चित्र सिर्फ महानगरों में देखने को मिलता है। देहात की नारी अभी भी शोषित है। नारी के प्रति इस प्रकार के विचार उन्होने अपने नाटकों में व्यक्त किए हैं। 'इला' और 'साँच कहूँ तो' इन दो नाटकों में उन्होने नारी की समस्याओं को चित्रित किया है। 'इला' में लिंग परिवर्तन जैसी भयानक समस्या तथा 'साँच कहूँ तो' में बालविवाह जैसी समस्या की ओर ईंगित किया है। श्रोत्रिय जी की पाँच बेटियाँ है संभव है इसी कारण उनके मन में नारी के प्रति इतना लगाव रहा होगा।

1.2.2.6 व्यावहारिक मार्क्सवादी

श्रोत्रिय जी को मार्क्सवादी विचारों के आलोचक माना जाता है। उन्हें भारतीय लोकतंत्र के प्रति इसी कारण निराशा का भाव उनके मन में रहा होगा। मार्क्सवाद को लेकर उनका कहना है - ''किसी भी सिद्धांत से मैं जिरह करना पसंद करता हूँ। मसलन मार्क्सवादी विचारों ने मुझे काफी प्रभावित किया है, लेकिन मैं भारत में उसकी द्वंद्वात्मक प्रक्रिया को उसी रूप में घटित होता हुआ नहीं देखता। इस देश के संस्कार, इसके इतिहास को बदलने और रचने से किए गये सार्थक योगदान को भूलकर सिर्फ मार्क्स-लेलिन का नाम नहीं जप सकता और

अब भी गांधी के हरिजन-उद्धार, लघु और ग्राम उद्योग की सामाजिक और आर्थिक योजना को इस देश के लिए सबसे बड़ी क्रांति मानता हूँ।''[7] इस प्रकार श्रोत्रिय जी मानते हैं कि मार्क्सवाद हमारे देश में पूरी तरह लागू नहीं हो सकता। मार्क्सवाद की अपेक्षा गांधी जी की क्रांति उन्हें प्रिय है।

1.2.2.7 मिलनसार व्यक्ति

श्रोत्रिय जी अपने घर आए किसी भी व्यक्ति का बढ़िया स्वागत करते हैं। हाथ में हाथ देकर उसका हाथ जोरों से दबाते हैं, उस व्यक्ति को ऐसे गले से लगाते हैं जिससे उनके गले की ऋद्राक्ष की माला चूभने लगती है। घर में बैठने के बाद थोड़े समय में वे उस व्यक्ति से साहित्य, समाज, देश, संस्कृति आदि विषयों को लेकर बातचीत करने लगते हैं। उस व्यक्ति के विचारों से जुड़ जाते हैं। इस प्रकार श्रोत्रिय जी मिलनसार व्यक्ति है।

निष्कर्ष

इस प्रकार श्रोत्रिय जी पूर्ण रूप से साहित्यकार नजर आते हैं। बचपन से वे परिश्रमी एवं संघर्षशील रहे हैं। नारी के प्रति उनके मन में अपार करूणा छिपी हुई है। अपने नाटकों में उन्होंने नारी की समस्याओं का चित्रण किया है। श्रोत्रिय जी भारतीय लोकतंत्र एवं राजनेताओं से काफी नाराज है। उन्हें ऐसा लगता है कि आज के राजनीतिज्ञों में एक भी ईमानदार राजनेता नहीं है। श्रोत्रिय जी मार्क्सवाद के प्रति आकर्षित रहे हैं मगर मार्क्सवादी व्यवस्था के कायल नहीं हैं। वे हसमुख एवं मिलनसार व्यक्ति है। नाटककार, कवि एवं निबंधकार की अपेक्षा उनका आलोचक का रूप सबसे बड़ा है। उन्होंने हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं काव्य की आलोचना की है। संपादक के रूप में भी उन्होंने काम किया है। श्रोत्रिय जी आलोचना को सृजन मानते आए हैं। वागर्थ, साक्षात्कार, अक्षरा और नया ज्ञानोदय जैसी पत्रिकाओं के संपादकत्व के रूप में भी श्रोत्रिय जी को काफी सफलता प्राप्त हुई है। इस प्रकार श्रोत्रिय जी के व्यक्तित्व में आलोचक, नाटककार, निबंधकार अर्थात एक सुजान साहित्यकार छुपा हुआ है।

1.3 कृतित्व

प्रभाकर श्रोत्रिय सृजनकार की अपेक्षा प्रख्यात आलोचक एवं निष्पक्ष समीक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं। कथा, नाटक, उपन्यास की अपेक्षा कविता की ओर वे अधिक आकर्षित हैं। श्रोत्रिय जी के साहित्य प्रवास की शुरूआत भी कविता से ही हुई है। बचपन में उनकी कविता सुनकर प्रभावित हुए तत्कालीन रक्षा मंत्री काटजू उन्हें 10 रू. प्रति माह वजीफा बांध देते हैं। यहीं से इनके बाल मन में कविता के प्रति लगाव निर्माण हुआ।

श्रोत्रिय जी ने चार निबंध संग्रह लिखे हैं इनमें भी उनकी पैनी आलोचक दृष्टि दिखाई देती है। उन्होंने

आलोचनात्मक किताबें अधिक लिखी हैं। जयशंकर प्रसाद, शिवमंगलसिंह सुमन, मैथिलीशरण गुप्त, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, आदि कवियों के काव्य और व्यक्तित्व को सही रूप से पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है।

श्रोत्रिय जी को संप्रति हिंदी आलोचना में सबसे विश्वसनीय आलोचक के रूप में माना जाता है। किसी साहित्यकार को अकारण ही महत्त्व देना उनके व्यक्तित्व में नहीं हैं। श्रोत्रिय जी ने संपादक के रूप में भी पर्याप्त कार्य किया है। लगभग बारह किताबों का संपादन उन्होंने किया है। विभिन्न पत्र-पत्रिका एवं संस्थाओं के साक्षात्कार उन्होंने प्रकाशित किए हैं। श्रोत्रिय जी ने कई पत्रिकाओं के संपादकत्व का भार भी संभाला है इसमें वागर्थ, साक्षात्कार, अक्षरा एवं नया ज्ञानोदय प्रमुख हैं। इस प्रकार श्रोत्रिय जी सिर्फ एक आलोचक ही नहीं तो बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार नजर आते हैं। अब तक प्रकाशित उनका साहित्य निम्नानुसार है -

1.3.1 आलोचना

श्रोत्रिय जी को हिंदी साहित्य में वरिष्ठ आलोचक के रूप में माना जाता है। श्रोत्रिय जी ने लगभग चौदह आलोचनात्मक ग्रंथ लिखे हैं। इसमें उन्होंने निष्पक्षता से आलोचना करने का काम किया हैं। श्रोत्रिय जी ने जादातर काव्य की आलोचनात्मक किताबें लिखी हैं। उनका विवरण निम्नानुसार -

1.	सुमन : मनुष्य और स्रष्टा	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली	1971/1990
2.	प्रसाद का साहित्य : प्रेमतात्विक दृष्टि	आत्माराम एंड संस, दिल्ली	1975
3.	कविता की तीसरी आँख	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1980/1990
4.	संवाद : नई कविता आलोचना और प्रतिक्रिया	राजपाल एंड संस, दिल्ली	1982
5.	कालयात्री है कविता	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1983/1993
6.	रचना एक यातना है	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1985
7.	अतीत के हंस : मैथिलीशरण गुप्त	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1988
8.	जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली	1990/2004
9.	मैं चलूँ कीर्ति-सी आगे-आगे	राष्ट्रीय शै. अनु. एवं प्रशि. परिषद, दिल्ली	प्रेस में
10.	मेघदूत : एक अन्तर्यात्रा	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1996
11.	शमशेर बहादुर सिंह	साहित्य अकादेमी, दिल्ली	1997

12.	प्रसाद साहित्य में प्रेम-तत्त्व	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली (1975 संस्करण का संशोधित रूप)	2000
13.	नरेश मेहता	साहित्य अकादेमी, दिल्ली	2003
14.	हिन्दी : कल आज कल	किताबघर, दिल्ली	2004

1.3.2 निबंध

श्रोत्रिय जी ने चार निबंध संग्रह लिखे हैं। इनमें आलोचक श्रोत्रिय जी को देखा जा सकता है। उन्होने सौंदर्य, समय, समाज, साहित्य आदि विषयों को लेकर लेखन किया है।

1.	सौन्दर्य का तात्पर्य	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1998
2.	समय का विवेक	किताबघर, दिल्ली	1999
3.	समय समाज साहित्य	किताबघर, दिल्ली	2002
4.	सर्जना का अग्नि-पथ	किताबघर, दिल्ली	2005

1.3.3 नाटक

श्रोत्रिय जी ने कुल मिलाकर तीन नाटक लिखे हैं। प्रथम नाटक 'इला' में उन्होने नारी की पीड़ा को इला एवं श्रद्धा के माध्यम से व्यक्त किया है। दूसरा नाटक 'साँच कहूँ तो' में भी उन्होने नारी को ही केंद्र बनाया है और तीसरा नाटक 'फिर से जहाँपनाह' में लोकतंत्र की कमजोरियाँ एवं तानाशाही व्यवस्था के दुष्परिणामों को व्यक्त किया है।

1.	इला (पेपरबैक संस्करण)	किताबघर, दिल्ली	1989/1996/2000
2.	साँच कहूँ तो...	किताबघर, दिल्ली	1993
3.	फिर से जहाँपनाह	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	1996

1.3.4 साक्षात्कार

इसमें श्रोत्रिय जी ने अलग-अलग संस्थाओं पत्रिकाओं को दिए साक्षात्कार 'मेरे साक्षात्कार' के रूप में दिए हैं।

1.	मेरे साक्षात्कार	किताबघर, दिल्ली	2003

1.3.5 संपादन

श्रोत्रिय जी ने लगभग तेरह ग्रंथों का संपादन किया है। इसमें प्रेमचंद, रामविलास शर्मा, कबीरदास, धर्मवीर भारती आदि महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों पर लेख संपादित किए हैं।

1.	अनुष्टुप (पं. सूर्यनारायण व्यास-कृतित्व)	म. प्र. शासन साहित्य परिषद	1972
2.	हिन्दी कविता की प्रगतिशील भूमिका	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1977/1995
3.	सूरदास : भक्ति कविता का एक उत्सव	म. प्र. साहित्य परिषद	1978
4.	प्रेमचंद : आज	म. प्र. साहित्य परिषद	1980
5.	रामविलास शर्मा : व्यक्ति और कवि	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1991
6.	धर्मवीर भारती : व्यक्ति और कवि	मो. के. साहित्य न्यास, दिल्ली	1992
7.	समय में कविता	म. प्र. साहित्य परिषद	1994
8.	अन्वय	म. प्र. साहित्य परिषद	1994
9.	दिशाएँ	आदर्श प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर	1996
10.	भारतीय श्रेष्ठ एकांकी, खण्ड - 1	भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता	1998
11.	भारतीय श्रेष्ठ एकांकी, खण्ड - 2	भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता	1999
12.	कबीरदास : विविध आयाम	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2002
13.	इक्कीसवीं शती का भविष्य	किताबघर, दिल्ली	2002

1.3.6 अनुवाद

उनकी निम्न रचनाओं का अनुवाद हुआ है -

1.	कविता की तीसरी आँख का अनुवाद	The Quintessence of Poetry by Dr. G.P. Pant : Natraj Publishing House, Karnal	1987

2. 'इला', भारत की ग्यारह भाषाओं में अनुवाद की प्रक्रिया में। आमिया, बंगला, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलगू, उर्दू, पंजाबी, मराठी, गुजराती, उड़िया।
3. 'इला' के रेडियो रूपान्तर का अँग्रेजी अनुवाद : प्रो. राजेंद्र दीक्षित द्वारा

1.3.7 आलेख / भाषण

विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेख एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों में भाषण -

लगभग 600 आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रसिध्द हुए हैं। तथा देश के अनेक विश्वविद्यालयों, संगोष्ठियों, भाषणमालाओं में अनेक भाषण दिए हैं।

1.3.8 विदेश यात्रा

नार्वे (साहित्यिक संगोष्ठी में भागीदारी)

1.3.9 पुरस्कार एवं सम्मान

श्रोत्रिय जी को साहित्य के उच्च पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। लगभग ग्यारह साहित्यिक पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया है।

1.	अखिल भारतीय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार	उ. प्र. हिंदी संस्थान	1987
2.	आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी पुरस्कार	म. प्र. साहित्य परिषद	1990
3.	अखिल भारतीय केड़िया पुरस्कार		1986
4.	'श्रेष्ठ कला आचार्य' मानद उपाधि	मधुवन, भोपाल	1989
5.	समय शिखर सम्मान	लोकोत्सव, कान्हा	1991
6.	अखिल भारतीय रामवृक्ष बेनीपुरी पुरस्कार	बिहार सरकार, भाषा विभाग	1992
7.	अखिल भारतीय श्री शारदा सम्मान	म. प्र. के हिंदी साहित्य एवं संस्कृति न्यास, देवरिया	1995
8.	मित्र मंदिर कोलकाता सम्मान		1998
9.	मध्य प्रदेश लेखक संघ का अक्षर आदित्य सम्मान		1999
10.	माधवराव सप्रे पत्र संग्रहालय का रामेश्वर गुरू साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार		2000
11.	विचार मंच कोलकाता का सारस्वत साधना सम्मान		2002

1.3.10 वर्तमान में

विविध समितियों एवं संस्थाओं के सदस्य के रूप में श्रोत्रिय जी कार्यरत हैं।

1. विद्या परिषद : एकेडेमिक काउंसिल, महात्मा गांधी अतंरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय
2. सदस्य : मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल
3. सदस्य : रूपान्तर नाट्य प्रशिक्षण केंद्र, गोरखपुर की विद्वत् परिषद
4. सदस्य : हिन्दी संस्थानों की राष्ट्रीय अनुदान समिति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   : पुस्तकचयन समिति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय

1.3.11 सलाहकार

भारत सरकार ने श्रोत्रिय जी को विभिन्न संस्थाओं के सलाहकार के रूप में भी उन्हें नियुक्त किया है।

दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी

साहित्य अकादमी दिल्ली (Who's who of Indian Writer's के हिंदीकरण के)

नेशनल बुक ट्रस्ट

सदस्य : भारत सरकार के कानून, न्याय और कंपनी मामलो मंत्रालय और डाक मंत्रालय के हिंदी सलाहकार मंडल में।

लक्ष्मी देवी ललित कला अकादमी, कानपुर

रामकुमार वर्मा जन्मशती समारोह, इलाहाबाद

1.3.12 कार्य (पूर्व में)

श्रोत्रिय जी विभिन्न पत्रिकाओं के संपादक एवं विभिन्न सरकारी परिषदों के सदस्य के रूप में भी कार्यरत हैं।

निदेशक : भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता

सम्पादक : 'वागर्थ' - साहित्यिक मासिक पत्रिका, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता

सदस्य : साधारण सभा और परामर्शदात्री समिति, साहित्य अकादमी, दिल्ली (1993-1997)

सदस्य : भारतीय विद्या भवन, कोलकाता

सदस्य : Institute for Educational Research and Development, Indore

सदस्य : हिंदी अध्ययन मंडल, रीवा विश्वविद्यालय

प्रोफेसर : हिंदी विभाग (मध्य प्रदेश शासन, उच्च शिक्षा)

सचिव : मध्य प्रदेश साहित्य परिषद (राज्य की साहित्य अकादेमी)

विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी : मध्य प्रदेश शासन, संस्कृति विभाग

संपादक : 'साक्षात्कार' (मध्य प्रदेश साहित्य परिषद की मासिक साहित्यिक पत्रिका)

सचिव : भोपाल विश्वविद्यालय अनुसंधान परिषद

संपादक : 'अक्षरा' (म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल की साहित्यिक पत्रिका)

विजिटिंग फैलो : पूना विश्वविद्यालय

शोध निर्देशक : भोपाल, विक्रम और खैरागढ़ विश्वविद्यालय

1.3.13 अकादमिक कार्य

श्रोत्रिय जी ने अकादमिक कार्य भी सफलता से किया है।

मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा अनुदान आयोग / इन्दिरा गाँधी खुला विश्वविद्यालय, दिल्ली / राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद, दिल्ली / मध्य प्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम की पुस्तकों का संपादन एवं आलेख-लेखन

निष्कर्ष

इस प्रकार श्रोत्रिय जी एक बहुमुखी, प्रतिभासंपन्न कवि, नाटककार, निबंधकार, आलोचक, संपादक एवं वक्ता के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। अपने साहित्य द्वारा उन्होंने मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव, गांधीवादी विचारों की जीवन में उपयोगिता एवं व्यावहारिकता, अन्याय का विरोध, नारी के प्रति करूणामय दृष्टि आदि को अपने साहित्य के जरिए प्रकट किया है। उनकी विद्वता एवं ख्याति के कारण अनेक संस्थानों में ससम्मान आमंत्रित हुए हैं तथा अनेक संस्थाओं के सलाहकार एवं निर्देशक संपादक रह चुके हैं। उनके साहित्य को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

संदर्भ संकेत

1. प्रभाकर श्रोत्रिय - 'कान्हाप्रसंग', पृ. 41
2. रामविलास शर्मा - 'कान्हाप्रसंग', पृ. 38
3. निरंजन श्रोत्रिय - 'कान्हाप्रसंग', पृ. 26
4. प्रभाकर श्रोत्रिय - 'कान्हाप्रसंग', पृ. 40
5. वही, पृ. 45
6. वही, पृ. 49